प्रथम अध्याय

संदर्भ

१] डॉ. सिंह राणा बलराज : उपन्यासकार जैनेन्द्र के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन [पृ.४५]

२] डॉ. शर्मा शकुन्तला : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मुल्यांकन पृष्ठ क्र. ४३

३] डॉ. कुलश्रेष्ठ विजय : जैनेन्द्र उपन्यास और कला पृष्ट क्र. २२

४] डॉ. शर्मा शकुन्तला : जैनेन्द्रकी कहानियाँ एक मुल्यांकन पृष्ठ क्र. ४४

५] सिंह शामनन्दन प्रसाद : हिन्दी साहित्य सर्वेक्षण और समोक्षा दिल्ली हिन्दी साहित्य संसारसे उदधृत पृ. ५१७

६] डॉ. कुलश्रेष्ठ विजय : जैनेन्द्र उपन्यास और कला पृष्ठ क्र. ५-६

७] डॉ. कुलश्रेष्ठ विजय : जैनेन्द्र उपन्यास और कला पृष्ठ क्र.७

व्दितीय अध्याय

हिन्दी कहानी और जैनेन्द्रकुमार

हिन्दी साहित्य में कहानी प्राचीन भारतीय परंपरा से विकसित होती चली आई है, फिर भी कहानीका उद्भाव उन्नीसवी शताब्दी से माना जाता है। इस समय बहुतसे लेखकोने कहानियाँ लिखी हैं, लेकिन परिणाम की दृष्टिसे बहुत कम हैं।

वैसे कुछ आलोचकोने इंशाअल्लाखाँ ने लिखी " रानी केतकी की कहानी " को हिंदी की सर्व प्रथम कहानी माना है। इसी समय के कहानिकारोंमें से लल्लुलाल भी थे जिन्होने " सिहांसन बत्तीसी " बैताल पच्चीसी " तथा " प्रेमसागर " नामक कहानियाँ लिखीं। मुन्शी सदासुखजीने " नियाज " " सुखसागर " सदलमिश्रजीने "नासिकेतो पाख्यान " आदि कहानियाँ लिखी। इसके अनन्तर राजा शिव प्रसादजीने " सितारे-हिन्द " " राजा भोज का सपना " आदि कहानियाँ प्रस्तुत कर चुके थे।

"भारतेन्दु के समकालीन कहानीकारों में सर्वप्रथम गौरीदत्त का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने " कहानी टका कमानी " तथा " देवरानी व जेठानी " कहानियाँ स्त्री शिक्षा के उद्देश्य से लिखी। इसी युग में कार्तिक प्रसाद खत्रीने " दामोदर राव की आत्मकहानी " लिखी। राधाचरण गोस्वामी ने " यमपूर की यात्रा " नामक कहानी लिखी। [1]"

इस युग के सर्व प्रमुख साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी कहानी के क्षेत्र में " एक कहानी : कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

तथा "एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न " आदी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। लेकिन इन रचनाओं में कहानी कम और निबंध अधिक हैं। यह कहानियाँ आधुनिक कहानी की कसौटी पर खरी नहीं उत्तरती तथा इन कहानियों से कहानी की परम्परा शुरु नहीं हुई ।

सन १९०० इ.स. में " सरस्वती " पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिससे अनेक कहानिकारों को अपनी कहानियाँ प्रकाशित करने का अवसर प्राप्त हुआ। जिसमें किशोरीलाल गोस्वामी की " इंदुमती " गुलाबहार, मास्टर भगवानदास की " प्लेग " की चुडैल " रामचंद्र शुक्ल " ग्यारह वर्ष का समय " बंग महिला की " दुलाईवाली " वृन्दावनलाल वर्मा की " राखीबन्ध भाई " और मैथिलीशरण गुप्तजीकी " नकली किला ", निन्यानवे का फेर", गिरिजादत्त वाजपेयी की " पंडित और पंडितानी " इसके उपरान्त माधव प्रसाद मिश्र, सत्यदेव विश्वम्भरनाथ जिज्जा और गिरिजाकुमार घोष की अनेक कहानियाँ सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई।

इनमेंसे किस कहानी को प्रथम आधुनिक कहानी माने इसके विषय में विद्वानो में मत भिन्नता है। तथापि इतना निश्चित है कि, सरस्वती के प्रकाशन के साथ ही आधुनिक कहानीका प्रारंभ होता है।

यह सभी कहानियाँ और कहानीकारोंमें से वस्तुत: प्रसाद और प्रेमचन्दजी को ही आधुनिक कहानी के सूत्रपात करनेका श्रेय मिलना चाहिए।

सन १९११ इ. में प्रसादजी की " ग्राम " कहानी " इन्दु" पत्रिका में प्रकाशित हुई और इसके उपरान्त भी कुछ कहानियाँ "इन्दु" "हिन्दी गल्पमाला" "माधुरी" आदि में प्रकाशित होती रही।

सन १९१६ इ. में प्रेमचंदजीने हिंदी-कहानी के क्षेत्र में प्रवेश किया था । उन्होंने "सप्तसरोज" "नवनिधि", "प्रेम पच्चीसी" नामक संकलनो में संकलित " सौत " पंच परमेश्वर " नमक का दरोगा " " बडे घर की बेटी " " रानी सारंधा " " मर्यादा की वेदी " " पापका अग्निकुंड " " ममता " "आमावस्या की रात्रि " आदि सभी कहानियाँ इस काल की हैं।

जयशंकर प्रसाद मूलता : प्रेम और सौन्दर्य के कवि थे। कवि के साथ- साथ उच्च कोटी के नाटककार भी थे। उनकी कहानियों पर एक ओर उनका कवि अपनी उत्कृष्ट कल्पना तथा भावुकता के साथ छाया हुआ है। प्रसादजी की प्रारंभिक रचनाओं पर बांगला का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था,: किन्तु बाद में उन्होंने अपनी स्वतंत्र शैलीका विकास किया। प्रसादजी की काव्यात्मकता उनके कहानियों में तथा नाटकों में भी मिलती है। उनकी कहानियो में प्रेम, करूणा, त्याग, बलिदान आदि के साथ-साथ दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, काव्यात्मकता और चित्रमयता का प्राधान्य अधिक हैं। इसी कारण उनकी जैसी कहानियाँ संस्कृत गद्यकाव्य के निकट पहुँचती हैं।

प्रसादजी की कहानियों के पाँच संग्रह उपलब्ध हैं। इनमेंसे सर्व प्रथम " छाया " कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं; दूसरे " प्रतिध्वनि " नामक कहानी संग्रह में पन्द्रह कहानियाँ है ; तीसरे " आकाशदीप " नामक संकलन में उन्नीस कहानियाँ संकलित है, चौथे " आँधी " कहानी संग्रह में चौदह कहानियाँ सम्मिलित हैं। अन्तिम पाँचवे " इन्द्रजाल " नामक कहानी संग्रह में चौदह कहानियाँ सम्मिलित हैं।

प्रसाद के प्रथम "छाया" कहानी संकलन में " तानसेन " " चन्दा", " ग्राम", " रसिया बालम", "शरणागत", " सिकन्दर की

शपथा", " चित्तौर उध्दार", " अशोक", "गुलाम" "जहाँनारा" और मदन मृणालिनी" नामक ग्यारह कहानियाँ संगृहीत है। इसमें से आठ कहानियाँ तो ऐतिहासिक है और शेष तीन कहानियाँ "चंन्दा", " ग्राम" " मदन-मृणालिनी " ही केवल काल्पनिक एवं सामाजिक हैं। ये सभी कहानियाँ प्रेम, और सौंदर्य की अव्दितीय भावनासे परिपूर्ण हैं। अधिकसे अधिक इनमें प्रेम, घृणा, विद्रोह, बलिदान, त्याग आदि का चित्रण सजीव ढंगसे हुआ है।

प्रसाद के दुसरे कहानी - संग्रह " प्रतिध्वनि" में "प्रसाद" " गुंदड साई", "गुदडो में लाल ", " अघोरी का मोह", "पाप की पराजय", " सहयोग", " पत्थर की पुकार", " उस पारका योगी", " करूणा की विजय", " खंडहर की लिपि", "कलावती की शिक्षा", " चक्रवर्तीका स्तंभ", " दुखिया", प्रतिमा" और "प्रलय" नामक पन्द्रह कहानियाँ संगृहीत हैं। इनमें से अधिकांश कहानियाँ गद्य-गीत के निकट हैं। इन कहानियोंमें रहस्यवादी मनोवृत्ति व्यक्त कि गयी है। तथा " प्रलय", " प्रतिमा", " दुखिया", " कलावती की शिक्षा" आदि कहानियाँ तो गद्य-गीत के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन कहानियों में घटना-क्रम है और न कथा प्रवाह है, इसी कारण यह कहानियाँ गद्य-काव्य का रूप धारण कर गई है।

प्रसाद के तीसरे कहानी संग्रह " आकाशदीप" में. " ममता", " स्वर्ग के खंडहर में", " सुनहला साँप", " हिमालय का पथिक", " भिखारिन", " कला", देवदासी", " समुद्र-संतरण", " वैरागी", " बनजारा", " चुडोवाली", " अपराधी", "प्रणय - चिहन", " रूप की छाया", " ज्योतिष्मती", "रमला और बिसाती", नामक उन्नीस कहानियाँ संगृहीत हैं। इनमें से अधिकांश कहानियाँ

प्रेम-प्रसगों गद्य-गीतों, एवं रेखाचित्रो को पध्दतीके दर्शन होते हैं। प्राय: कुछ कहानियों में नाटकीय तत्वों से मिश्रित कथा- योजना अपनाई गयी है।

प्रसाद के चौथे कहानी संग्रह में केवल ग्यारह कहानियाँ संकलित है ; जो " आँधी " "मधुआ", "दासी", "घीसू", "बेडी", "व्रत-भंग", "ग्राम-गीत", "विजया", "अमिट स्मृति", "नीरा", और "पुरस्कार"के नाम से संकलित हैं। इनमेंसे कुछ कहानियाँ तो ऐतिहासिक एवं काल्पनिक प्रसंगो को लेकर लिखि गयी हैं। इस संग्रह की कहानियों में स्त्री पात्रों में विलक्षण आकर्षण तथा अनुठे सौंदर्य की सृष्टि हुई हैं। इन सभी कहानियों में करूणा, त्याग, और उत्सर्ग की भावना का चित्रण अनूठे ढंगसे हुआ है तथा अंतर्द्वंद्व एवं संघर्ष का निरूपण मनोविज्ञान पध्दतिपर हुआ है।

प्रसाद के पाँचवे कहानी-संग्रह " इन्द्रजाल" में "इन्द्रजाल" " सलीम", " छोटा जादूगर", "नूरी", "परिवर्तन", "सन्देह", "भीख" में, "चित्रवाले" पत्थर", "चित्र-मंन्दिर", "गुण्डा", "अनबोला", "देवरथ", "विराम-चिहन" और "सालवती" नामक चौदह कहानियाँ संगृहीत हैं। यह प्रसाद का अन्तिम एवं उत्कृष्ट कहानी संग्रह हैं। इस कहानी संग्रह में संग्रहीत ऐतिहासिक कहानियों में किसी समस्या को न उठाकर केवल कारूणिक संवेदना का चित्रण हुआ हैं। अन्य कहानियों में सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह प्रदर्शित करते हुए जीवन के यथार्थ को भी व्यक्त किया गया है। प्रस्तुत कहानियों में भारतीय संस्कृति तथा मनोविज्ञान को व्यक्त किया है। प्रसादजीने अपने कहानियों में करूणा, त्याग, बलिदान, दया, क्षमा, सत्य आदि का उद्घाटन किया है।

इसप्रकार प्रसादजीने प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, रहस्यात्मक, प्रतीकात्मक, मनोवैज्ञानिक समसामायिक आदि विविध प्रकार की कहानियाँ लिखी हैं। प्रसादजी की कहानियों में आदर्श और भारतीय दर्शन का समन्वय मिलता है। भावुकता की दृष्टिसे हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रसादजीका स्थान विशिष्ट है।

प्रसादजी के समय के और भी कुछ महत्त्वपूर्ण कहानीकार आते हैं, रायकृष्णदास, चण्डीप्रसाद, हृदयेश, विनोदशंकर व्यास, गोविंद वल्लभ पंत, सियाराम शरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि हैं।

हिन्दी कहानी का व्दितीय उत्थान प्रेमचन्द से ही माना जाता है। प्रेमचन्द हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एक युग प्रवर्तक कहानीकार के रूप में प्रसिध्द है। "प्रेमचन्द कहानी के क्षेत्र में आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परम्परा के प्रतिष्ठापक है जबकि प्रसाद भावमूलक परम्परा के।" प्रेमचन्दजी व्दारा लिखि गई कहानियों की संख्या तीन सौ के करीब है।

प्रेमचन्द ने उर्दू में कहानियाँ लिखना बहुतपहले आरम्भ कर दिया था किन्तु हिन्दी में उनकी सर्व प्रथम कहानी "पंचपरमेश्वर" प्रसाद की ग्राम कहानी से पाँच साल बाद में प्रकाशित हुई। इनकी उर्दू कहानियों के संग्रह "सोजेवतन" को अंग्रेज सरकारने जला दिया था।

प्रेमचन्द ने लिखी सभी कहानियाँ "सप्त सरोज", "नवनिधि", "प्रेम-पचीसी", "प्रेम-प्रसून", "प्रेम-व्दादशी", प्रेम-पूर्णिमा", प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियाँ आदि कई संकलन प्रकाशित भी हुए है, परन्तु अब उनकी सभी कहानियों को "मानसरोवर" भाग एक से आठ

तक ; दूसरे "कफन" कहानी संग्रह में तथा तीसरे "गुप्तधन" भाग एक और दो में संकलित कर दिया गया है।

प्रेमचन्दजी की कहानियों का पट भी उनकी उपन्यासों के समांतर तथा ग्राम जीवन से ही संबधित है। प्रेमचन्दजीकी सभी कहानियाँ भारतीय जन जीवन का दर्शन करती है। उन्ही की कहानियों में कस्बाई जिंदगी, सत्याग्रह, आंदोलन, किसानोंकी समस्या, पाठशाला, कॉलेज, कारखाने, पंचायत, कलेक्टरी, हायकोर्ट, जमीदार, साहुकार, क्लर्क, उच्चपदाधिकारी, वेश्यालयों आदि तत्कालीन मानव-जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसी तरह प्रेमचन्द ने तत्कालीन जीवन का यथार्थ चित्रण आवश्य किया है, परन्तु उन्होंने नग्न यथार्थ को प्रश्रय नहीं दिया है। उनकी कहानियोंमें दु:खद गरीबी, असहय दु:ख, महान स्वार्थ, मिथ्या आडम्बर, आदि से तड़पते हुए व्यक्तियों की अकुलाहट मिलती है। प्रेमचन्दजी ने साहित्य को जीवन की व्याख्या और आलोचना माना था। इतना ही नहीं निम्न से निम्न एवं उच्च से उच्च वर्ग की स्थितियों का अध्ययन करके तत्कालीन जीवन का यथातथ्य चित्रण अपनी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया।

प्रेमचन्द जी ग्राम-निवासी होने के कारण ग्रामीण जीवन वहाँ की परिस्थिती, रीति, रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, खेत-खलियान, रूढि परम्परा आदि से भली प्रकार परिचित थे। इसी कारण उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भारत के ग्रामीण जीवन का सच्चा इतिहास प्रस्तुत किया।

प्रेमचन्दजी को विषम परिस्थितियों से जुझते हुए जीवन व्यापन करना पड़ा था। कभी-कभी उन्हे व्यावसायिक दृष्टिकोन से भी कहानियाँ लिखनी पडी जिससे उन कहानियों का स्तर उँचा नहीं है ;

फिरभी ऐसी कहानियोंमें भी उन्होंने अपनी जीवन दृष्टिका त्याग नहीं किया। प्रेमचन्दजी का कलाकार हृदय अत्यंत सजग और विकासमान था। वे अपनी कमजोरियों को समझ गये थे, और उन्हे दूर करने का भी यथाशक्त् प्रयत्न करते थें।

प्रेमचन्द के पदार्पण से हिन्दी-कहानी में एक नया मोड आया था, उन्होंने हिन्दी कहानी को एक नई दिशा प्रदान की थी। उन्होंने अशिक्षित एवं शिक्षित नारी, अनपढ़ किसान, अमीर, मजदूर, आदियों का गहन अध्ययन किया था और वे उस मध्य वर्ग से भली-भाँति परिचित थे।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में तत्कालीन इसी सत्य को अंकित करके भारत के विविध वर्गों के पात्रों, उनके पारस्पारिक सम्बन्धों, उनकी विविध परिस्थितियों का प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि प्रेमचन्द आधुनिक कहानी के युग-प्रवर्तक ही न थे, आपितु वे स्वयं एक हिन्दी-कहानी के युग थे।

प्रेमचन्दजी ने पीडित-दलित जनता के प्रति सहज सहानुभूति और करूणा, देशप्रेम, और स्वतन्त्रता की आदर्शोन्मुख भावना, इसी कारण वे भारतीय जनता के प्रतिनिधि कलाकार बने। उनकी भाषा शैली मुहावरेदार, विषय व्यापकता, चरित्र चित्रण की सुक्ष्मता, विचार व भाव, गम्भीरता, प्रवाहपूर्ण सुबोध शैली एवं लोक संग्रह की भावनासे प्रेमचन्द की कहानियाँ अव्दितीय बन पडी है।

प्रेमचन्दजीने अनेकों विषय लेकर अपने कहानियों का विरूपण किया था। इनमें तत्कालीन समाज में व्याप्त रुढ़ियों, अन्धविश्वासों, परम्पराओं, मान्यताओं, कुप्रथाओं कुरितियों दुराचारों अनाचारों आदि का भी पर्दाफाश किया गया है।

“ "उनकी श्रेष्ठ कहानियों में से पंचपरमेश्वर, आत्माराम, बड़े घर की बेटी, शतरंज के खिलाड़ी, वज्रपात, रानी सारंधा, अलग्योझा, ईदगाह, अग्नि समाधि, पूस की रात, सुजान भगत, कफन आदि पर हिन्दी जगत को गर्व है और इन्हें विश्व की श्रेष्ठ कहानियों की तुलना में नि:संकोच रखा जा सकता है।"

प्रेमचंद के अतिरिक्त अन्य भी अनेक कहानीकार ऐसे हुए है, जिन्होंने हिन्दी कहानी के विकास में अपना योगदान दिया है। इनमें पंडीत चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी", विश्वम्भरनाथ कौशिक, पृथ्वीनाथ भट्ट, सुदर्शन, पाण्डेय बेचन शर्मा "उग्र" अचार्य चतुरसेन शास्त्री राजाराधिका रमण प्रसाद सिंह, रायकृष्ण दास, हरिशंकर शर्मा, अन्नपूर्णानिन्द, सियाराम शरण गुप्त, आदि है।

पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरीजीने "उसने कहा था" "सुखमय जीवन", तथा बुध्दू का काटा", यह तीन कहानियाँ लिखी है। उनकी "उसने कहा था" इस कहानी में युध्द के सजीव वातावरण के भीतर सरल और निश्चल प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। आज भी इस कहानी के टक्कर की कहानी दुर्लभ है। विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक भी समाज सुधारवादी और आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रधान कहानीकार है। इनकी कहानियाँ "मणिमाला" तथा "चित्रशाला" में प्रकाशित हुई हैं। रायकृष्ण दास ने "सुधांशु" तथा "आखों की थाह" संग्रहों में मुख्यत: ऐतिहासिक, दार्शनिक, प्रतिकात्मक और भावना प्रधान कहानियाँ लिखी हैं। हरिशंकर शर्माने इस काल में कुछ हास्य-व्यंग पूर्ण कहानियाँ लिखी। जो "चिड़िया घर", "भुखामशहूरा" तथा "बीरबलनामा" आदि संग्रहों में प्रकाशित हुई है। इनमें कर्तव्य, प्रेम आदर्श और बलिदान की भावनाओं का चित्रण हुआ है।

अन्नपूर्णानन्द ने सामाजिक विषयोंपर हास्य व्यंग्य प्रधान कहानियाँ लिखी हैं जो "मेरी हजामत" तथा "कल की बात" आदि संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं।

सियाराम शरण गुप्तजीने "मानुषी" में संग्रहीत कहानियों में गांधीवादी विचारधारा का समर्थन किया है। सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" ने विविध विषयों को लेकर कहानियाँ लिखी है, जिसमें शोषण समस्या, पारिवारीक समस्या, धार्मिक पाखण्ड आदि विषयों को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। "अपनाघार" तथा "चतुरी चमार" आदि संग्रह में प्रकाशित हुई है।

प्रेमचन्द के ही सदृश्य प्रमुख कहानीकार सुदर्शन हैं। हिन्दी साहित्य में कहानीकार के दृष्टि से अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। सुदर्शन पहले उर्दू में ही कहानियाँ लिखा करते थे और प्रेमचन्द की तरह ही उर्दू के क्षेत्र से आकर हिन्दी में कहानियाँ लिखने लगे थे। सन १९२० ई. में सरस्वती पत्रिका में "हार की जीत" नामक कहानी प्रकाशित हुई। उनकी कहानियों में जीवन का सच्चा चित्र सरल और "हृदयस्पर्शी भाषा में मिलता है।[८]" उनकी कहानियों के दस संग्रह प्रकाशित हो चुके है "सुदर्शन सुधा", सुदर्शन सुमन", तीर्थयात्रा", "पुष्पलता", "गल्पमंजरी", "सुप्रभात", चार कहानियाँ", "नगीना", "परिवर्तन", "पनघट", आदि है। इनके कहानियों में जीवन सत्यों व मानविय भावनाओं का अत्यंत रोचक और सरस वर्णन मिलता है। इनकी "हार की जीत", "कमल की बेटी", संसार की सबसे बडी कहानी और "कवि की स्त्री" आदि कहानियाँ प्रसिध्द है।[२०] चरित्र चित्रण सुदर्शन की कहानियों की प्रमुख विशेषता है।

"प्रेमचन्द युग के कहानिकारों में जहूरबख्श का नाम भी उल्लेखनीय है। इनकी कहानियों मुख्यत: सामाजिक तथा बालोपयोगी है।" इस युग के यथार्थवादी कहानिकारों में पाण्डेय बेचन शर्मा "उग्र" का नाम भी विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। उग्रजीने विद्रोह, पूँजीवादी, सामन्ती, व्यवस्था के प्रति व्यक्त किया है। उन्होंने राज नितिक, सामाजिक, विचारों, रूढिओं, अन्ध विश्वासो और मिथ्या परम्पराओंपर खुलकर प्रहार किया है। इन्द्रधनुष्य, " दोजखकी आग पोली इमारत, तथा उग्रकी श्रेष्ठ कहानियाँ आदि संग्रहों संगृहीत इनकी कहानियों में यथार्थ परक दृष्टिकोण को आधार बनाकर सामाजिक रूढियों को निरर्थकता की ओर संकेत किया गया है। इनका दृष्टिकोन भी मुखत: सुधारवादी रहा है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्रीने भी कतिपय सामाजिक और ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं। उन्हे ऐतिहासिक कहानियों के क्षेत्र में विशेष सफलता मिली है। "चतुरसेन शास्त्री ने भी " उग्र " की तरह सामाजिक कुरीतियों का भण्डाभोड किया है।[3] अपने गम्भीर ज्ञान के कारण वे सृजन करने में विशेष प्रवीण हैं। इनकी कहानियों के संग्रह "रजकण" और अक्षत, बाघर्चिन, "दे खुदाकी राहपर", दुखवा मै कासे कहूँ ? मोरी सजनी, आदि। इनकी प्रसिध्द कहानियाँ "ककडी की कीमत, भिक्षुराज, आदि हैं। ""प्रसाद से लेकर अबतक व्यवहारिक, आदर्शवादी, यथार्थवादी, ऐतिहासिक, रोमानी कुतूहल प्रधान, हास्यरस तथा प्रतीकात्मक अनेक प्रकार की कहानियाँ लिखी गई है।[2]

आदर्शवादी तथा व्यवहारिक कहानियों में घरेलू तथा सामाजिक समस्याओं, अछुतोध्दार, विधवा विवाह, विदेशी सभ्यता

पुरानी-रूढियों, परंपराओं का खंडन आदि है। इन सभी प्रकार की कहानियों में ग्राम्य जीवन तथा चरित्र-चित्रण को प्रधानता दी गई है।

इस युग के मुख्य कहानीकार प्रेमचंद, कौशिक, और सुदर्शन हैं। यथार्थवादी कहानियों की प्रतिक्रिया में अनेक साहित्यकारोंने भी अपना योगदान रखा है, लेकिन इसमें सामाजिक बीभत्सताका नग्न चित्रण किया गया है। इनमें उग्र, चतुरसेन शास्त्री, तथा वृषभचरण जैन आदि मुख्य लेखक हैं। ऐतिहासिक तथा यथार्थ आदर्शवादीताका समन्वय प्रसादजी की कहानियों में मिलता है। वृन्दावनलाल वर्मा ने बुन्देलखण्ड की आँचलिक पृष्टभूमि में ऐतिहासिक, सामाजिक तथा शिकार सम्बन्धी कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। इनका प्रकाशन "दबेपाव" ऐतिहासिक कहानियाँ तथा "शरणागत" आदि संग्रहोमें हुआ है।

गोपालराम गहमरी, दुर्गाप्रसाद, खत्री, और जी.पी. श्रीवास्तव आदि लेखकोंने जासुसी ऐय्यारी, और तिलस्मी कहानियाँ लिखी हैं। जिसे कुतूहल प्रधान कहानियाँ कही जाती हैं। लेकिन इन कहानियों में लेखकोंने जीवन के गम्भीर तत्वों का अभाव रखा है। जी.पी. श्रीवास्तव तथा बद्रीनारायण आदि लेखकोने हास्यरस की कहानियाँ लिखी हैं। इसी प्रकार इस काल की कहानियों में वर्णनात्मक आत्मकथात्मक, तथा पत्रशैलियों का प्रयोग हुआ है।

हिन्दी कथा साहित्य में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का श्रेय जैनेन्द्रकुमारजी को प्राप्त है। प्रेमचन्द के बाद वही ऐसे कलाकार हैं, जिन्हें नयी दिशा का प्रर्वतक कहा जा सकता है। उन्होने मानवीय मन को मूल प्रवृ-त्तियों, मनोभावो और संवेगों का सूक्ष्म विश्लेषण किया

है। साथ में तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी दार्शनिक चिन्तन के सहारे जो कहानियाँ लिखी हैं उनमें शिक्षा, धर्म, आदर्श और नीतिकी प्रतिष्ठा की है; सूक्ष्म से सिध्दांतो को लेकर उनका विवेचन किया है। आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ-साथ सांस्कृतिक महत्व की स्थापना की हैं। उनके कहानियों में मानवता के प्रति अटूट आस्था तथा अव्यक्त एवं अगोचर सत्ता में गहन विश्वास प्रकट किया है। संसार में अज्ञात शक्ति द्वारा संचालित मानव-जीवन जो चलता है उसी को भी लेखकने व्यक्त किया है। मानव मनके गहन गुत्थियों को लेकर मनुष्य के मन:स्थिति को व्यक्त किया हैं। मनुष्य के मन की भावना तथा विचारों को कहानियों के पात्रों के माध्यमसे उजागर करने का प्रयत्न किया है।

जैनेन्द्रकुमारजीने अपने कहानियों में जीवन के किसी-न-किसी तथ्य की ओर संकेत करके अन्तरिक सत्य का विश्लेषण करके अदृश्य आत्मा को लक्ष्य बनया है। कहानियों में कहानी के भाव मुख्य हैं तथा कहानी की कथा मुख्य नही है, ऐसा जैनेन्द्रकुमारजी मानते हैं। कहानी का मूलभाव महत्वपूर्ण हैं। लेखक दृश्य जगत को महत्व नहीं देते अंतत: अदृश्य जगत और मूल भाव महत्वपूर्ण होते हैं। इसी कारण जैनेन्द्रजीने अपनी कहानियों के तथा उनके पात्रों के माध्यमसे जीवन का अदृश्य अमूर्त, तथा अन्त: सत्य का उदघाटन अत्यंत रोचक ढंगसे किया हैं।

जैनेन्द्रकुमारजीने स्वतंत्र शिल्प का प्रयोग करके अनेक प्रकारकी कहानियाँ लिखि। जिसमें पौराणिक, ऐतिहासिक, राज-नीतिक तथा काल्पनिक और पशु पक्षी जगत से संबंधित है।

कहानियों में आदर्शवादी पध्दती की रचना की गई है। इनमें कथा दृष्टान्त तथा वार्तालाप शैली अपनाई गई है। जैनेन्द्रजीने कहानियों में नूतन प्रयोग करके अनेक कहानियाँ लिखी, परंतु कला की दृष्टिसे यह दार्शनिक कहानियाँ अधिक उत्कृष्ट नहीं लगती।

"जैनेन्द्रकुमारजी मूलत: व्यक्तिवादी मूल्यों के कहानीकार है। वे पुरानी पीढी के एक ऐसे कहानीकार है, जिन्होने अस्तित्वपर प्रश्न चिन्ह लगाने का प्रयास किया क्योंकि वैयक्तिक नैतिकता को स्वीकारा है। उनकी प्रथम कहानियोंमें व्यक्ति समस्याओं को दार्शनिक ढंगसे प्रयोग किया और समाज की अपेक्षाकृत व्यक्ति की समस्याओं को विशेष स्थान दिया। यही कारण है कि वे कहानी की परम्परा में पहले कहानीकार रहे जिन्होने एक नया मोड तथा नये मूल्यों को प्रतिष्ठित किया।"[9]

"जैनेन्द्रकुमार सर्व प्रथम मनो वैज्ञानिक कहानीकार है ; जिन्होने मानव मनकी सूक्ष्म गहराइयों तक जाकर उसके अचेतन मन की मानसिक ग्रंथियों को सुलझाने का प्रयास किया है।"[2] मानसिक परिवेश में मनो वैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन तथा सम्भ्रमित मन की गहन परिस्थितियों को उजागर किया है। कहानी-कला में उनकी मनो वैज्ञानिक कहानीयों में विशेष प्रभाव दिखाई देता है। मानव मन की विविध स्थिति को लेकर मन का यथार्थ चित्रण किया है। मानव के अन्तर्मन की दमित इच्छाओं के उपरी स्तर को खोलकर उसमें विद्यमान गहराई को प्रस्तुत किया है। परिस्थिति तथा विषमता से उत्पन्न उलझनों को लेकर मानव मन में कुण्ठा, घुटन, पीडा, विसंगती एवं निराशा और वासनासे उत्पन्न अतृप्ति को कहानियों में चित्रित किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपनी कहानियों में प्रधान-स्त्री-पात्रों के विविध पहलुओं पर भी प्रकाश डालकर उनकी व्यक्तिगत समस्याओं का सुक्ष्म विश्लेषण किया है। अपनी कहानियों में अनेक प्रकारकी नायिकाओंका निरूपण किया है, तथा उनकी मन की दमीत भावना मानसिक उद्वेगों को तथा मनोभावों का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। लेखकने अपनी कहानियोंमें मानव की अच्छाई बुराई तथा मानव-मन की ग्रन्थियों का विश्लेषण अत्यन्त कलात्मक ढंग से किया है।

जैनेन्द्रकुमारजीने अपनी कहानियोंमे समाज के सभी प्रकार के मानवों का तथा उनके मन को सुक्ष्म दृष्टिसे जाँच कर उनकी संवेदनाओं के यथार्थ चित्र अंकित किए हैं। "जैनेन्द्रजीने मानव की अपूर्णताको अधिक चित्रित किया है। और उन्हे सफलता भी मिली है। उनके पात्रों में बाहय नैतिकता भी नहीं है और न वैयक्तिकता मूल्यों के प्रति मोह ही रखा है। मुख्यत: उन्होने वैयक्तिक मूल्यों में इच्छाओं और अहं की तृप्ति को महत्व दिया है।"

जैनेन्द्रकुमारजीकी जो कहानियाँ है उनमेंसे मनोवैज्ञानिक कहानियाँही सर्वोत्कृष्ठ हैं। इनमें शैलीकी नवीनता कला की उत्कृष्ठता घटना और संयोगो का समावेश कम हुआ है। सुक्ष्म तत्वों से निर्मित होने पर भी कथा तत्वों का लोप नहीं हुआ है। कहानियों में आत्म विश्लेषण को प्रधानता तथा मानसिक घात-प्रतिघातों का चित्रण सुक्ष्मतासे किया गया है। जो अवचेतन है उसी को और ध्यान आकर्षित करके पात्रों के व्यक्तित्व को अधिक मुखरित किया है। कहानियों में नाटकीय तत्वों को भी अपनाया गया है। तथा पात्रों के विश्लेषण को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। परिस्थिति

तथा भावों के अनुकूल लाक्षणिक शैली को अपनाकर भावाभिव्यक्ति की स्वाभाविकता की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। इन कहानियों में सामाजिक विषमताओं तथा विसंगतियों का सांकेतिक चित्रण किया गया है।

जैनेन्द्रकुमारजीने मनोवैज्ञानिक कहानियाँ अधिक लिखी हैं ; जो रेखाचित्र के बहुत निकट हैं। इन कहानियों के माध्यमसे मानव जीवन का सफल दर्शन करवाया है। इन्हीं कहानियों के माध्यम से मनो विज्ञान के धरातल पर व्यक्ति का सूक्ष्म से सूक्ष्म अध्ययन करके मूल नैतिक प्रश्नो को उठाया है जो हमारी संस्कृति के मूलाधार है। दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक तथ्यों में मानव मन की सूक्ष्म भाव-भावनाओं का समावेश करके कहानी को एक नया मोड दिया है।

जैनेन्द्रकुमारजीने अपने कहानियों में गांधीवाद, जैनधर्म, बौध्दधर्म, से अहिंसा, करूणा, मैत्री की भावनाओंको ग्रहण कर कहानी तथा उनके पात्रों के द्वारा अभिव्यक्त किया है। "एक ओर आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को स्वीकारा है वहाँ दूसरे भौतिक मूल्यों का विरोध प्रस्तुत किया है। इसलिए उन्होने दया, प्रेम, त्याग, मानवता आदि मूल्यों की स्थापना पर बल दिया है।"

जैनेन्द्रकुमारजीने अपने जीवनसे तथा जगत से ही विषयोंका चयन करके कहानियों का निर्माण किया है। जीवन में कुछ घटनाएँ ऐसी घटी है, देखी है, और उस पर विचार करना पड़ा है, उसी घटनाओं को लेकर कहानियोंका निर्माण किया जिसमें जीवन का चिंतन मनन, तथा विश्लेषण किया है। "जैनेन्द्रकुमारजी व्यक्तिवादी और मनो वैज्ञानिक कहानीकार है। उन्होने मानव मन को परखा है उसके

मनोविकारग्रस्त मन को मनोवैज्ञानिक ढंगसे चित्रित किया है।”[१०] उनके कहानियों में अंधा विश्वासों से भरी परंपरा, मानसिक घात-प्रतिघात इच्छा-अनिच्छा, राग-विराग, श्रध्दा-विश्वास, मान्यताएँ, धारणाएँ रीति-कुरीतियोंका अत्यंत सूक्ष्म विश्लेषण मनोवैज्ञानिक आधारपर किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी फ्रायड का प्रभाव स्वीकार करते हैं, परन्तु सत्य यह है कि फ्रायड की अपेक्षा गेस्टाल्टवादी मनो विज्ञान से वे अधिक प्रभावित है।“मनो वैज्ञानिक अनुभूति के आधार पर विकृतिपूर्ण जीवन का परीक्षण करते है। उनकी मनो वैज्ञानिक पध्दति उनके दर्शन तथा चिन्तन-मनन का कारण है। वह जीवन-मंथन में से विकृतियों को एक सहृदय डॉक्टर की भाँति खोजते हैं तथा तीव्रतम भाव प्रवाह का साधान के रूपमें लेकर उसका निराकरण या परिष्कार करना चाहते हैं। उनकी मूल भावना आत्मपीड़न है।”[११]

कहानियों में वर्तमान परिस्थितियों का पूर्व परिस्थिति-योंसे तादात्म्य स्थापित करके कलात्मकता उत्पन्न की गई है तथा कथा विकास में मानसिक सूत्रोंका अवलंम्बन किया गया है। "कहीं-कहीं सामाजिक चेतना भी दीख पड़ी पर इनके साहित्य की पृष्ठ-भूमि सदैव पारिवारिक रही है, घरेलू स्त्री-पुरुष इनके विषय रहे हैं।

“जैनेन्द्रकुमार ने नारी-पुरुष के यौन सम्बन्धों में वैयक्तिक रूप दिया है। वे स्त्री पुरुष के बीच किसीप्रकार की नैतिकता को स्वीकार नहीं करते हैं और यौन सम्बन्धों की आवश्यकता पर बल देते हैं।”[१२] सामाजिक सम्बन्धोंपर प्रकाश डालते हुए स्त्री-पुरुष को प्रेम और विवाह-सम्बन्धी समस्याओं का उद्घाटन किया है।

कहानियों में भी प्रेम त्रिकोण-पति-पत्नी-प्रेमी की स्थिति दृष्टि-गोचर होती है। स्त्री-पुरुष के प्रेम और विवाह परक सामाजिक सम्बन्धों को एक उदात्त मानवीय सुक्ष्म दृष्टि से देखा है और उसके यथार्थ सत्य तक पहुँचकर जीवन के सतही सम्बन्धों को स्पष्ट किया है।

कहानीकार के रूप में जैनेन्द्रकुमारजी ने बहुसंख्या कहानियाँ लिखी है। इनमें कहानी लेखन की प्रतिभा प्रारंभिक काल से उत्पन्न हो चुकी थी। इनकी सर्व प्रथम कहानी सन १९२८ में "विशाल भारत" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी और उसका शीर्षक "खेल" था। जैनेन्द्रकुमार की कहानियों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी कहानियाँ संख्या १५० से अधिक हैं। और सब कहानियाँ जैनेन्द्र की कहानियाँ शीर्षकसे दस भागों में अलग-अलग भागो में प्रकाशित हो चुकी हैं।

जैनेन्द्र कुमारजी ने अनेक प्रकार की कहानियाँ लिखी है। इसमें दार्शनिकता की भी कहानियाँ मिलती हैं। दार्शनिकता के आलावा लेखकने पौराणिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक एवं ऐतिहासिक तथा प्रतिकात्मक कथानक लेकर वर्तमान स्थितीमें समाज की विभिन्न समस्यांओ को लेकर जैनेन्द्र कुमारजी ने विविध कहानियाँ लिखी। घटना और पात्रों के व्दारा कथानक को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। अपनी कहानियों में लेखकने आध्यात्मिक अनुभूतियों, दार्शनिक सिध्दान्तों, सांस्कृतिक प्रेरणाओं का सहारा लेकर मानव जीवन और जगत का चित्रण प्रस्तुत किया है।

जैनेन्द्र कुमारजी ने अपनी कहानियो में सांस्कृतिक विचार धारा तथा चिन्तन मनन को लेकर आगे बढने को प्रेरणा दी है।

पौराणि कथा,कल्पना, इतिहास, आख्यान आख्यायिका आदि को आधार बनाकर इन्होंने कहानियाँ लिखी। इसी कारण लेखकने अपने कहानियों को कहीं पर छोडा नहीं है। फिर भी कही-कही पर कुछ कहानियाँ ठिक नहीं लगती लेकिन उसे सुंदर बनानेका प्रयास लेखकने किया है।

दार्शनिकता के कारण मनुष्य जीवन का सत्य सही प्रकारसे उभार आता है। इसी दार्शनिक सत्य को लेकर लेखकने चार प्रकारकी कहानियाँ लिखी। जैसे पौराणि कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, काल्पनिक कहानियाँ और प्रतिकात्मक कहानियाँ आदि।

जैनेन्द्रकुमारजी की आरम्भिक कहानियों के कथानक प्राय: दार्शनिक पृष्ठभूमिपर निर्मित है। इन कहानियों में लेखकने संस्कृत आख्यान तथा आख्यायिका तथा पौराणिक गाथा, तथा कल्पना का सहारा लिया है। इन कहानियों की विशेषता यह है कि कहानीकी शुरूआत समस्या से होकर कहानीका अन्त किसी दार्शनिक उद्देश्य के निरूपण व्दारा होता है।

"भद्रबाहु" नामक कहानी में भद्रबाहू तथा इन्द्र का संघर्ष दिखाते हुऐ यह सिध्द किया है कि सभी समस्या कारण पृथ्वी है, और सबसे बलिष्ठ तथा महान मानव है। उसी प्रकार "जय सन्धि" नामक कहानीमें पुरुष और स्त्री प्रेम विवाह के बारे में यह स्पष्ट किया है कि मानव किसी अज्ञात शक्ति व्दारा प्रेरित तथा संचलित होता है। "राजपथिक" नामक कहानीमें लेखकने परोक्ष सत्ता तथा उसके खोज की ओर प्रेरित किया है। "लाल सरोवर" नामक कहानीमें लेखकने सांस्कृतिक प्रेरणा तथा नैतिकता, और मानवता के विकास का शुभ सन्देश दिया है। "नीलम देश को राजकन्या" कहानीमें

लेखकने राजकुमार तथा रानी के माध्यमसे ब्रहम और आत्मा की व्याख्या की है।

दार्शनिक कहानियों के माध्यमसे लेखकने मानव जीवन के किसी न किसी सत्य को ओर संकेत किया है। जैसे "तत्सत" कहानी व्दारा यह बताया है कि यह जगत सत्य नहीं है लेकिन ब्रहम सत्य है और वह सर्वत्र व्याप्त है। धनिकों को ओर संकेत करते हुए लेखकने "चिड़िया की बच्ची" नामक कहानी में यह बताया है कि धनिक खुद को सर्व शक्तिमान समझते है और दीन-हीन तथा दरिद्र व्यक्तियों को अपने वश में कर लेते हैं लेकिन गरीब जागरूक होकर छुटकारा पाने को कोशिश करतें हैं तब वह छुटकारा नही पा सकते है।

"देवी-देवता" कहानी के कथानक व्दारा लेखकने समझाया है कि हमारे समाज में अनेक धर्मों के पुरूष तथा स्त्री रहते हैं लेकिन उनमें विवाह स्वतन्त्रता, सती, परतन्त्रता, तलाक, वेश्या, पाप-पुण्य आदि से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ हैं, परन्तु ये समस्याएँ नारी तथा पुरूष के पारस्पारिक प्रेमभाव तथा समझोते से ही हल हो सकती हैं। लेकिन यह नहीं होता है। "वह साप" नामक कहानीके कथानक व्दारा बताया है कि साँप के पास विष रहता है वह काटता है लेकिन यह उसका धर्म है फिर भी वह इश्वरसे डरता है और ईश्वर को पुछना चाहता है कि मुझे विषैला क्यों बना दिया ? इसी प्रकार जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने सभी दार्शनिक कहानियों के माध्यमसे आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को प्रस्तुत किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी अपनी दार्शनिक कहानियों के चरित्रोंकी योजना अलग-अलग प्रकारसे की है। ऐतिहासिक चरित्रों का चयन कर के

यशो विजय, वसंत तिलका, जयवीर, जय संधि आदि के जीवन में किसी अज्ञात शक्ति की रहस्यात्मक प्रेरणा चित्रित की गई है जो झूठे प्रेम के दिखावे में बंधे हुए हैं और झूठे बलिदान को ही अपने जीवन का सर्वस्व मान लेते हैं।

अपनी कहानियों में शंकर, पार्वती, इन्द्र आदि पौराणिक चरित्रों का चित्रण किया है जो पृथ्वी और मान की तरह आचरण करते हैं। लेकिन इनमें एक अलग विशेषता है जो लेखकने अपने कहानियों में प्रस्तुत की है, यह सभी भावुकती हैं लेकिन समय के साथ- साथ अपना चेहरा बदल लेते हैं। दुनियामें सभी बुराइयों का कारण पृथ्वी है और देव देवताओंसे भी महान यहाँ का मानव श्रेष्ठ तथा शक्तिशाली है यही स्पष्ट किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने "लाल सरोवर" बैरागी, राजा, रानी, राजकुमारी, राजकुमार, आदि कहानियों में आध्यात्मिक तथा लौकिक चरित्रों की सृष्टि की है लेकिन यह सत्य न होकर काल्पनिक हैं। फिर भी इन सभी कहानियों की विशेषता यह है कि इनमें चरित्रिक निष्ठा और नैतिकता का स्तर अधि उच्च कोटी का है। जो पात्र आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके पास श्रध्दा भक्ति, नैतिकता अधिक मात्रामें विद्यमान है। जो मानवता के पुजारी है, ईश्वर को माननेवाले है, उसकी सत्ता को माननेवाले होकर भी इसी समाज में उस ईश्वर के गुणों को लेकर एक दुसरे से मिल जुलकर नहीं रहते इसी बात की ओर भी लेखकने संकेत किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने दार्शनिक कहानियों में प्रतिकात्मक चरित्रों की सृष्टि की है जैसे पेड़, पौधे, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी

आदि का चुनाव किया है, और मानव जीवन की रीति-नीति, आचार-विचार, एवं इसके जीवन-दर्शन का चित्रण अधिक मनोरंजक ढंगसे किया है। लेखकने "तत्सत" कहानी में जंगल, ब्रह्म की सम्पूर्णता एवं सत्य का प्रतीक, शीशम जिज्ञासु का प्रती माना है। बबूल वाचाल व्यक्ति का प्रतीक है तथा "घास" निरीह एवं भोले-भाले व्यक्ति का प्रतीक माना है। सिंहराज उन राजाओं का प्रतीक है, जो गर्व से भरे रहते है और अपने सामने सभी को तुच्छ समझा करते है। "चिड़िया की बच्ची" कहानी में चिड़िया भोले तथा निरीह साधनहीन व्यक्तिका प्रतीक है जो माधवदास जैसे गर्वीले एवं धनाढय व्यक्ति के षड़यन्त्र में फँसकर प्रलोभन का शिकार बन जाती है। "वह साँप" नामक कहानी में साँप दुर्जन व्यक्ति का प्रतीक है जो स्वभाव से ही दुष्टता एवं क्रूरता मे लीन रहता है, परन्तु किसी निरीह एवं भोले-भाले व्यक्ति को यादि उसके कारण जान से हाथ धोने पड़ते है तो अपने कुकृत्यपर पश्चताप करता है तथा ईश्वर से अपने जहर के दाँत निकाल लेने की प्रार्थना करता है।

इस प्रकार जैनेन्द्रकुमारजी ने दार्शनिक कहानियों में प्रतिकात्मक चरित्रों के माध्यमसे लेखकने समाज के अनेक जन जीवन के किसी न किसी अमूर्त, दृश्य, अदृश्य आनुषांगिक अन्त्य:सत्य का उद्घाटन किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियोंमें कथानकों के मूलाधार दर्शन और मनोविज्ञान है। "जैनेन्द्र की अधिकांश आरम्भिक कहानियोंमें बाल-मनोविज्ञान के सभी सुक्ष्म संकेत मिलते है[52] जैनेन्द्र-कुमारजी ने मानव-जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। इनमे व्यक्ति को महत्त्व देकर उसी को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है।

"खोल" आत्म-शिक्षण, सिका रुपया, इनाम, चोर, पाजेब आदि कहानीयों में बाल-मनोविज्ञान को सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई है।"

जैनेन्द्रकुमारजी अपनी कहानियों में पारंपारिक मूल्यों और सामाजिक बन्धनो में जकडे हुए मानव को संघर्ष करते हुए और विरोधी परिस्थितियोंसे लड़ते हुए दिखाया है। उन्होंने सामन्य व्यक्ति की असामान्य परिस्थितियों का अपनी कहानियों में सूक्ष्म संकेत किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी सामाजिक, पारिवारिक आदि परिस्थिती-यों से कुंण्ठित मानव मन:स्थिति का बाह्य परिस्थितियोंसे संघर्ष दिखाया है कुछ कहानियों में व्यक्ति के एक लम्बे पक्ष को लेकर उसका सूक्ष्म संकेत दिया गया है तो कुछ कहानियों में जीवन के विशिष्ट चित्रों की झाँकी मिलती है।

जैनेन्द्रकुमारजी की मनोवैज्ञानिक कहानियों में से प्रमुख कहानियाँ है जान्हवी, मास्टरजी, घुंघरू, अकेला, समाप्ति, सम्बोधन, ग्रामोफोन का रिकार्ड, दृष्टिदोष, विस्मृति, परावर्तन, ब्याह, तथा भाभी आदि। इनमें मुख्यत: प्रेम और विवाह से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक समस्याओंका निरूपण हुआ है। पाचवे भाग की कहानियों मे भी परदेसी, एकरात, आदि कहानियाँ मनोवैज्ञानिक रूप से समस्याओंका निरूपण करती है। सातवे भाग की कहानियों में टकराहट, राजीव औभाभी, सोद्देश्य, कुछ उलझन, मौत की कहानी, रुकिया बुढीया, क्या हो, तथावह चेहरा, आदि रचनाएँ इसमें प्रकाशित हुई है जिनकी विशेषता मनोवैज्ञानिक चित्रण की सुक्ष्मता है। इसी के साथ-साथ वे कहानियों के नववे भाग में विज्ञान विचार शक्ति, प्रण और परिणाम, वह रानी, "अमिया तुम चुप

क्यों हो गयो, मृत्य दंड, निखारो हुई कहानो, अविज्ञान, बोमारो दिन रात सवेरा, तथा दो सहेलियाँ आदि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रधान कहानियाँ है।

जैनेन्द्रकुमारजो के दसवे भाग को कहानियों में भो मानव के अन्तर्मन के रहस्यों का उद्घाटन मनोवैज्ञानिक शिल्प-पध्दतियों व्दारा हुआ है। इस संग्रह में महामहिम, निरशेष, यथावत, विच्छेद, कुक्त प्रयोग, कष्ट, बेकार झमेला, ये दो, वे दो छ: पत्र दो राहें, जीना मरना, उलटफेर, चक्कर सदाचार का, आदि कहानियाँ मनोवैज्ञानिक पध्दतिसे निरूपण किया गया है।

जैनेन्द्रकुमारजो को सभो कहानियाँ मुख्यत: उस को चरित्र को प्रतिष्ठापना मनो विज्ञानपर की गई है। लेकिन उनकी कहानियाँ तीन वर्गों में बांटी जा सकती है।

जैनेन्द्रके प्रथम वर्ग के कहानियों में व्याह, भाभो, घुंघरू जान्हवो, ग्रामोफोन का रिकार्ड, मास्टरजो, आदि कहानियाँ मनो-विज्ञानपर अधारित होने पर भो वह प्रथम वर्ग में रखो जातो है ।

दुसरे वर्ग के अन्तर्गत आनेवालो कहानियों का कथानक अत्यन्त बौध्दिक धरातल से जुड़ा हुआ है। जिसमें "एक रात, इस कहानो में लेखकने यह स्पष्ट किया है कि स्वस्थतथा सामाजिक जीवन के लिए मनुष्य का कुंठा-रहित वैयक्तिक जोवन आवश्यक है। उसी प्रकार "परदेसो" कहानो में उपरी तौर पर एक दुसरे के प्रति कोई प्रेम नहीं पर अन्दर हो अन्दर प्रेम पल्लवोत होता है इस बातको व्यक्त किया है।

तोसरे वर्ग को कहानियों के कथानक अपेक्षाकृत अधिकाधिक

सूक्ष्म तत्वों से निर्मित है। कहानियों को चरित्र के विशिष्ट घटना पर लिखी गई है और उसके जीवन के किसी विशिष्ट क्रिया को महत्त्वपूर्ण रूप को उपस्थित किया है। इसमें "राजीव और भाभी, "टकराहट" रुकिया बुढ़िया, तत्सत आदि कहानियाँ विद्यमान है।

"जयसन्धि" नामक कहानी में सम्पूर्ण और खण्ड की बात कही गई है। "नई व्यवस्था" कहानी में लेखकने पात्रों के माध्यमसे सम्पूर्णता एवं एकता की बात कही है। उसी प्रकार "स्पर्धा" कहानी में भी लेखक की विचारधारा सम्पूर्णतावादी रही है। "उपलब्धी" कहानी में कुत्ते ने शरीरकी क्षत-विक्षत करने परभी मालीक के मन उसके प्रति प्रेम है। "सौध्देश्य" कहानी में पुरुष-स्त्री का यौनाकर्षण और काव्य का संबंध किस प्रकार बनता है यह इस कहानी में मिलता है।

[60]इन कहानियों के अतिरिक्त प्रथम, व्दितीय, तथा तृतीय भाग की अनेक ऐसी कहानियाँ है जिनमें गेस्टाल्ट वादी विचार-धारा स्पष्ट ढूँढी जा सकती है। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान यह मानता है कि प्रत्येक प्रकार का ज्ञान परस्पर सम्बध्द रूपसे ही होता है। गेस्टाल्ट मनो विज्ञान यह मानता है कि प्रत्येक प्रकार का ज्ञान परस्पर सम्बध्द रूपसे ही होता है। जैनेन्द्र की "खेल" कहानी में प्रातिभ ज्ञान को स्पष्टत: देखा जा सकता है।[29]

इन कहानियों से बढ़कर जटील मनो वैज्ञानिक धारणा की कहानियाँ है। इन कहानियों में उनका प्रमुख आधार स्त्री-पुरुष का पारस्पारिक सम्बन्ध है। "पत्नी" कहानी में पति-पत्नी एक दुसरे को समझने में असमर्थ है। "चोरी" कहानी में एक ओर लक्ष्मू

की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय होने के कारण तथा दूसरी और महाजन के दुव्यविहार के कारण उसे चोरी जैसे अपराधपूर्ण कार्य को करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। "सजा" कहानी में मिस्रानी भी इसी आर्थिक वैषम्य के कारण चोरी करती है और चोरी के अपराध में पकडी जाती है।" इसी प्रकार "नादोरा" कहानी में अरण्यालंकारिक छटा, विस्मय-विमुग्ध करने वाली वन्य-सरलता, हिंसा और क्रूर पैशाचिकता का वर्णन, निःशब्द, अश्रुबिन्दुओ को मार्मिकता और यायावारों की वह निस्संग वापसी का गद्य के माध्यमसे सूक्ष्म विश्लेषण हुआ है।[35]

जैनेन्द्रकुमारजी मानवीय कुण्ठाओं, अन्तर्द्वन्द्वों, भावना एवं हीनता-ग्रन्थियों तथा अन्य मानसिक क्रिया प्रतिक्रियाओं का वैज्ञानिक परीक्षण विधी से सुक्ष्म विश्लेषण किया है। जैनेन्द्रकुमारजी के सम्पूर्ण कहानी साहित्य के मनो वैज्ञानिक पक्ष को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है। इनकी सामान्य मनो विज्ञानवाली कहानियों में समाज में अधिष्ठित व्यक्ति का सूक्ष्म विश्लेषण कियागया है। और उसकी प्रेम अथवा विवाह पुरक समस्या अथवा स्त्री-पुरुष के पारस्पारिक गलत सम्बन्धो का सूक्ष्म संकेत किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी के अधिकांश चरित्र अन्तर्मुखी है। सब के सब किसी न किसी अन्तर्द्वन्द्व घात-प्रतिघात से अनुप्राणित रहते हैं। तथा मनो विज्ञान की अधिकांश कहानियों के नायक प्राय: मध्यवर्ग के है और गेस्टाल्ट अथवा जटिल मनो वैज्ञानिक कहानियों के नायक उच्च वर्ग के होने के बावजूद भी एक सामान्य वर्ग के व्यक्ति की भाँति अचरण करते हैं।

जैनेन्द्रकुमारको सभी कहानियाँ लघु आकार की है। इन कहानियों में नारी जीवन की प्रेम और विवाह परक समस्याओं, अतृप्त इच्छाओं सामाजिक अथवा नैतिक विषयों का सुक्ष्म विश्लेषण हुआ है। इन कहानियों के पात्र समाज के विस्तृत धरातल पर अवतीर्ण नहीं होते अपितु अपनी ही अन्तर्व्यथाओं में डूबते रहते है।

इनके कहानियों की और एक विशेषता यह है की कहानियों के गौण पुरुष पात्र प्रमुख पात्रों के जीवन के चारों ओर घुमते रहते हैं। इसीलिए इनका व्यक्तित्व इतना उभार नही पाता जितना प्रमुख पात्रों का उभारता है।

जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों के नायकोंकी यह विशेषता है कि वह बहिर्मुखी अधिक हैं। तथा सभी नायक मध्यम वर्ग के है। जीवन में आनेवाली समस्याओं और अन्तर्द्वन्द्वो के कारण पात्र समाज की ओर ध्यान नहीं देते आपसी जीवन के उलझानो को सुलझाते हुए व्यक्तिवादी बन गये हैं समाज की ओर ध्यान देने के लिए उनके पास समय ही नहीं है।

कहानियों के नायक अत्यंत सहनशिल हैं क्यों कि पत्नी ने दुर्व्यवहार करने पर तथा दुराचारिणी होने पर भी संयमसे रहते हैं। पत्नी की एखाद स्नेह पूर्ण बातसे गुस्सा थूँक देते है। कामी होते हुए भी अन्य स्त्री के प्रति असक्त नहीं होते। उसी वातावरण में एवं परिस्थिति में घुटते हुए जीवन यापन करते रहते हैं।

जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों के नायक अत्यन्त हीन मनोवृत्तिवाले हैं जिनका चारित्रिक पतन हो चुका है और एक नहीं अपितु असंख्य स्त्रियों के साथ निर्दयता पूर्वक आचरण करते है। नायक

आत्मसम्मान पाने के लिए जीवन से पलायन नहीं करते।

मूलत: कहानी के सभी नायक कुण्ठा, घुटन, अन्तर्द्वन्द्व से घिरे रहते है चाहे वह किसी वर्ग या जाती के हो। नायकों की तरह कहानियों में अधिकांश नायिकाएँ मध्यम वर्ग की है। उनकी हालात संघर्षपूर्ण होने के कारण पर पुरूष के प्रति आत्मसमर्पण की भावना सदैव बलवती रहती है। शरीर को महत्व न देते हुए आत्मा को महत्त्व देती है। "काम-भावना से पीडित होने के कारण नायिकाओं की मन:स्थिति संघर्षपूर्ण रहती है। वे जीवन से पलायन भी करना चाहती है। और साथ ही जीवन-रक्षा के लिए भी प्रयत्नशील रहती हैं। वे पहले तो सामाजिक दृष्टि से अनैतिक कार्य कर बैठती है परन्तु बाद में पश्चताप की अग्नि में जलती रहती है।"[56]

कुछ कहानियों की नायिकाएँ अपने पति को सुधारने के लिए तथा सहि मार्गपर लाने के लिए पर पुरूष के साथ भाग कर जाती है और पति में सुधार आ गया है वह देखकर वह अपने पति के पास वापस आकर रहने की इच्छा व्यक्त करती है।

कुछ नायिकाएं ऐसी भी है जो पति तथा समाज व्दारा घोर अत्याचार करने पर भी वह शान्त रहती हैं। न रह किसी पर पुरूष के साथ संबध जोडती हैं न किसी से कुछ कहती है। घुट घुट कर नीरस तथा एकाकी जीवन-यापन करने में ही विश्वास रखती है।

"जैनेन्द्रकुमारजी की सामान्य मनो विज्ञान की कहानियों में गौण नारी पात्रों पर व्यक्तिवादी तथा अहंवादी युग की प्रवृत्तियों का अधिक प्रभाव रहा है। गौण नारी पात्र अत्यन्त

स्नेहशील और भावुक है, इसलिए उन्हें, अत्याधिक वेदना या पीडा भोगनी पडती है।२६

कुछ कहानियों की नायिकाएँ ऐसी भी है जिनके कुछ सामान्य स्त्री पात्र पर पुरुष के सम्पर्क में आने की अपेक्षा भीख मांगना उचित समझती है। इन्ही सामन्य नारी पात्रों पर अहंवादी युग की प्रवृत्तियाँ प्राधान्य अधिक है। परिस्थितिवश नायिका पापपूर्ण कृत्यों को करने के लिए भी बाध्य हो जाती हैं। वह पाप और पुण्या का हिसाब कर ना नहीं चाहती। कुछ नायिकाएँ अपने पति के साथ प्रामाणिक नहीं है, क्यों कि विवाहोपरान्त भी पति को धोखा देकर प्रेमी के पास भाग जाने की प्रवृत्ति रहती है। अथवा पति के पास रहते हुए भी प्रेमी से प्रेम करती रहती है। जटिल मनो वैज्ञानिक धारणावाली अधिकांश कहानियाँ ऐसी है जिनके सामन्य स्त्री पात्रा अत्यन्त अधाम तथा पर पुरुष को चाहने वालले हैं।

जैनेन्द्रकुमारजी अनेक कहानियोंपर फ्रायड के काम सिध्दांतों का प्रभाव है, यद्यपि उन्होंने फ्रायड के काम सिध्दांतो को ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं किया है। "उन्होने फ्रायड की "सेक्स" समस्या को ग्रहन करते हुए अपने ही ढंग से नारी-पुरुष के ऐंद्रिक सम्बन्धो और अतृप्त काम वासनाओं का नग्न चित्राण किया है।" लेखक की मान्यता है कि अतृप्त यौन-इच्छाएँ दमित होकर मन के अचेतन स्तर पर पडी रहती है। वे दमित भावनाएँ अथवा इच्छाएँ ही मनुष्य के क्रिया कलापों में विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त होती है। "रत्नप्रभा" बीदि्स, प्रतिभा, निस्तारण, परावर्तन, ग्रामोफोन का रिकार्ड, "विस्मृति" मास्टरजी, दर्शन की राह, जान्हवी आदि कहानियों में उन्मुक्त कामेच्छा हा सूक्ष्म संकेत हुआ है।

12712
A

जैनेन्द्रकुमारजी के कथा साहित्य का एक मात्र मूल उद्देश्य मानव जीवन के सत्य का उद्घाटन करना है। अपने कहानी-साहित्य में भी असाधारण परिस्थिति मे पड़े असाधारण व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं और अन्तर्द्वन्द्वों का मार्मिक विश्लेषण किया है। जो कि निश्चित रूप से मनो वैज्ञानिक विश्लेषण की प्रक्रिया के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अपरिहार्य भी है। अधिकांश कहानियाँ इस प्रकार की भी हैं जिनके पात्र अत्यन्त दयनीय आर्थिक स्थिति होने के कारण कुण्ठा से घिरे रहते हैं। कुण्ठा का मूल कारण बाधाओं द्वारा उत्पन्न परिस्थितियाँ है। कहानियों के पात्र पारिवारिक, सामाजिक, तथा आर्थिक स्थितिसे असन्तुष्ट रहते हैं इसीलिए निरन्तर अर्न्तर्द्वन्द्व के कारण उनकी मन: स्थिति कुण्ठित हो जाती है।

जैनेन्द्रकुमार की अधिकांश मनो वैज्ञानिक कहानियों में हीनता, प्रेमजन्य प्रतिक्षा, काम भावनासे पीडित पात्र तथा अनेक व्यथाओंका सूक्ष्म संकेत मिलता है।

"फ्रायड के समान जैनेन्द्रजी की भी धारणा है कि काम-प्रवृत्ति समस्त चेष्टाओं का उद्गम है।" असंख्या कहानियाँ इस प्रकार की हैं जिनमें काम प्रवृत्ति का स्पष्ट संकेत मिलता है। "ग्रामोफोन का रिकार्ड" नामक कहानी भी इसी प्रकार की है। "जिनका स्वप्न, "अभागे लोग" "मुक्ति" आदि कहानियों में भी काम-प्रवृत्ति का उद्गम है। "जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियों के पात्रों यह विशेषता है कि चाहे वे किसी भी उम्र के क्यों न हों उनमें काम-भावना समान रूप से पाई जाती है। कुछ कहानियोंमें स्त्री-पुरुष में वय की पर्याप्त असमानता पाईजाती है। काम वासना के लिए किसी भी निश्चित

उम्र का होना इन पात्रों के लिए इतना आवश्यक नहीं है।" "ब्याह" दो चिड़िया आदि कहानियाँ इसके उदाहरण हैं।

मनुष्य की स्वभावगत विशेषाता का रूप भी कुछ कहानियों मे मिलता है जैसे अहं, भय, जिज्ञासा, आदि की वृत्ति खेल, जनता, चोर, पढाई, आदि कहानियों मे इसका दर्शन होता है। घृणा और तिरस्कार की भावना भी "मिठोश्वीझा" संबोधन, आदि कहानियों में लेखकने इसका विवेचन किया है। स्त्री पुरुष की पारस्पारिक काम-भावनाओं को ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों के काम-संसार का भी उन्होने अपनी कहानियों में सूक्ष्म उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त बालकों में अहं, भय, जिज्ञासा-वृत्ति, मातृत्व घृणा, तिरस्कार आदि भावनाओं का भी दर्शन होता है।

जैनेन्द्रकुमार की अधिकांश कहानियों में पात्रों के मन में विरोधी स्थिति उत्पन्न होने पर मानव के मन में बदले की भावना प्रवृत्त होती है। ठीक इसी प्रकार जग व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन बिगड जाता है तब निरन्तर संघार्ष एवं कुण्ठा के कारण उसके अन्तर्मन में घुटन होने लगती है। इसी प्रकार की घुटन लेकर पात्र रहते हैं। अधिकांश मनोवैज्ञानिक कहानियों में इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ मिलती हैं जिनसे कुण्ठित होकर पात्र घुटन अनुभव करते है। इसी प्रकार "अन्धे का भेद, भाभी, प्यार का तर्क, रुकिया बुढी, परदेसी, सम्बोधन, एकरात, घुंघरू, गोमोफोन का रिकार्ड, रत्नप्रभा, मास्टरजी आदि सामान्या मनोविज्ञान की कुछ ऐसी कहानियाँ है जिनमें पति अथवा पत्नी अपने व्यक्तिगत जीवन से असन्तुष्ट है। अपने मन की घुटन पूर्ण स्थिति को दूर करने के लिए वह किसी तिसरे पात्र का आश्रय लेते हैं अथवा किसी अन्य पुरुष या स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध

स्थापित करके पति अथवा पत्नी की स्थिति कुण्ठित और घुटनमय बना देते हैं।

जैनेन्द्रकुमार के कहानियों के पात्र मुसिबतों मे तथा बिकट परिस्थिति उपस्थित होने पर भी स्वयं की रक्षा करने के लिए उद्यत रहते है चाहे उसमें उन्हे अनेक यातनाएँ झेलनी पड़े फिरभी पलायन करना नहीं चाहते। स्त्री पात्रों की विशेषता यह है कि वह अधिक सहिष्णु हैं। वे जीवन से पलायन नहीं करती बल्कि स्वयं कठोर से कठोर यातनाओं को झेलते हुए जीवन यापन करते हैं। कहानियों की स्त्री पात्र अत्यंत सहिष्णू हैं पति व्दारा सताए जाने पर अत्यन्त कुण्ठित हो जाती हैं, परन्तु जीवन रक्षा के लिए कोई न कोई मार्ग ढूँढ निकालती हैं। यातनाओंमें, मुसिबतों में हर हालात में चाहे दुसरा मार्ग चुनना क्यों न पडे वे जीवन जीना चाहती हैं।

वातावरण की दृष्टिसे कहानी में देश, काल और युग के अनुरूप परिस्थितयों का आधार लेकर कथा वस्तु की रचना होनी चाहिए। वास्तवमें कहानी को उचित रूप देने में वातावरण काही अधिक हाथ रहता है। जैनेन्द्रने भी अपनी कहानियों में विविध प्रकार से वातावरण निर्माण किया है। कहानी में जिस स्थान अर्थात, देश, प्रदेश, प्रान्त, व्दीप, गाँव, नगर आदि को आधार बनाकर कहानी की सृष्टि की जाती है। वैसे ही कहानी जिस समय की है अथवा लेखक नें कहानी में जिस समय की घटना कथीत की है, वह महिना, काल, ऋतु, दिन आदि का भी वर्णन कहानीमें लिखानेसें कहानी को यथार्थ रूप मिल जाता है। कहानी केवल काल ऋतुतक सिमित न रहते हुए उसमें युग की रीति-नीति, आचार-विचार, रहन-सहन, वेश-भूषा, बोलचाल की भाषासंस्कृति, आदि के विवरण

से कहानी प्रभावात्मक तथा मर्मस्पर्शी बन जाती है। कहानी काल्पनिक होकर भी सत्य प्रतीत लगती है।

जैनेन्द्रकुमार के कहानियों में भी इसी प्रकार की सृष्टि मिलती है। अपनी कहानियोमें स्थान का विवरण देकर वातावरण का सजीव निर्माण किया है तथा प्रकृति-चित्रण एवं वैयक्ति विवरणो के व्दारा भी कहानी के वातावरण का निमार्ण किया है। कहानी में कथोपकथन या संवाद भी कहीं-कहीं वातावरण की सृष्टि में अत्यन्त सहायक होते हैं आदि सभी विशेष स्थानो का विवरण जैनेन्द्र के कहानियों में मिलते है। देशगत विशेषता "पत्नी" कहानी के आरम्भ में ही मिलती है इसी प्रकार जान्हवी कहानी में भी लेखकने वातावरण की सृष्टि की है जैसे शहर के किसी एक ओर अलगसा मकान मुहल्ले की हलचल इसी प्रकार वातावरण का निमार्ण किया है। "अपना-अपना भाग्य" कहानी में नैनीताल की संध्या- बेला का एक जीता-जागता चित्र अंकित किया है। धीरे-धीरे उतरने वाली संध्या, हवा के थपेड खाते हुए भागने वाले बादल, वातावरण की सृष्टि तथा युगानुकूल परिस्थिति का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

इस प्रकार जैनेन्द्रकुमार ने अपनी कहानियों को यथार्थरूप तथा उनमें सजीवता एवं स्वाभाविकता लाने के लिए प्रकृति का जीता-जागता, चित्रण किया है। कहीं-कहींपर किसी विशेष स्थान, प्रान्त, देश का यथातथ्या रूप निरूपण किया है। समाज में अनेक प्रकार के अनेक प्रवृत्तियों के लोग होते हैं ऐसे किसी व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं का सच्चा रूप प्रस्तुत किया। व्यक्ति के साथ-साथ लेखकने कही किसी समाज के रहन-सहन एवं आचार-विचार संस्कृति का वास्तविक वर्णन किया है।

लेखकने अपने कहानियों में ऐतिहासिक स्थालोंका पशु-पक्षियों का, प्रकृतिका, देहातो का मुहल्ले को हलचल तथा गति विधियों का जोता जागता चित्र अंकित किया है। इसो प्रकार पारिवारिक जोवन और सत्यता तथा पती पत्नीमें होनेवालो घुटन निराशा, आदि का सत्य दर्शन कहानियोंमें सजोव, स्वाभाविक यथार्थ एवं प्रभावोत्पादक वातावरण निर्माण करता है।

रचना शिल्प को दृष्टिसे जैनेन्द्र ने विविध प्रकार को कहानियाँ लिखो है और उन कहानियों के लिए विविध रचना शैलोयों को भी अपनाया है। इसका कारण यह है कि जैनेन्द्र को बहुत वर्षों से कहानियाँ लिखते चले आये हैं और उन्होने दुसरे कहानोकारों और उनको कहानियों को देखा है। कहानियों को पुरानो शैलो थी वह तो है लेकिन उसो के अनुरूप आज भी कहानियोंका निमार्ण हो रहा है। इसीलिए जैनेन्द्र की कहानियों में हमें विविध रचना शैलोयों के दर्शन होते है।

ऐतिहासिक शैलो के अन्तर्गत कहानोकार इतिहास को तरह वर्णनात्मक-पध्दतो में विविध घटना, हालात, रहन-सहन, रोति-रिवाज, आचार-विचार, आदि संस्कृति का विवरण प्रस्तुत करता हुआ कहानो को रचना करता है। जैनेन्द्रने भी इस शैलों का बहुत जगह प्रयोग किया है और उनको अनेक कहानियाँ इसो ऐतिहासिक शैलो में निर्मित हुई हैं। जैसे प्रथम कहानो संग्रह में "जयसंधि" तिसरे कहानो संग्रह में "बाहुबलो", हवामहल, गुरु कात्यायन, "नारद का अर्ध्य" "निलम देश को राजकन्या" चौथे कहानो संग्रह में मास्टरजी जान्हवो, पांचवे कहानो संग्रह में एकरात, सातवे कहानो संग्रह में "राजीव और भाभी", रुकिया बुढीया, तिरबेनो, चालीस रूपये,

आठवे कहानी संग्रहमें पत्नी, आदि कहानियों की निर्मिती ऐतिहासिक शैलीपर हुई है।

आत्मचरित शैली के अन्तर्गत कहानीकार कहानी के किसी पात्र के रूपमें अपने ही जीवन की कहानी कहता है। यहाँ कहानीकारही कहानी का मुख्य पात्र होता है। जैनेन्द्रने इस आत्मचरित शैली में भी कई कहानियाँ लिखी है। जैसे दुसरे कहानी संग्रह में "अपना अपना भाग्य", छटे कहानी संग्रहमें क:पन्था और सातवे कहानी संग्रह में "मौत की कहानी" "दर्शन की चाह, तो लाए ? प्रेम की बात", आदि कहानियाँ आत्मचरित शैली के अन्तर्गत आती है।

जैनेन्द्रकुमार ने आत्मकथात्मक शैली को भी अपना कर कहानियाँ लिखी हैं जिनमें पाँचवे कहानी संग्रहमें "नादीरा" नामक कहानी इसी शैली की है।

पत्र शैली के अन्तर्गत सम्पूर्ण कहानी वर्ग रचना पत्रों के व्दार होती है। कभी-कभी सम्पूर्ण कहानी की कथा एक पत्र में आती है, तो कभी-कभी कहानी की कथा अनेक पत्रों में बांटी जाती है। जैनेन्द्र ने भी इसी शैली का प्रयोग करके दो से अधिक पत्रों के माध्यम से पत्रात्मक शैली में भी अपनी कहानियों की रचना की है। जैसे "परावर्तन" "कुछ उलझन" आदि कहानियाँ है।

कथोपकथन शैलीमें सम्पूर्ण कहानी की कथा संवादो के माध्यमसे होती है। इसे संवाद शैली भी कहा जाता है। "ब्रीड्रिस" नामक कहानी जैनेन्द्रने इसी प्रकार से लिखी है।

नाटक शैलीके अन्तर्गत सभी कहानी की कथा नाटकीय ढंग से की जाती है और सभी कहानी अभिनयात्मक पध्दति को अपनाते

हुए कही जाती है। जैनेन्द्र की "परदेशी" कहानी की रचना इसी प्रकार की है।

स्वगत-भाषण शैली के अन्तर्गत किसी पात्र के स्वगत-भाषण द्वारा ही सम्पूर्ण कहानी की रचना की जाती है। "क्या हो ? नामक कहानी जैनेन्द्रकुमारने स्वगत-भाषण शैली को अपनाते हुए लिखि है। इस प्रकार जैनेन्द्रने विविध रचना शैलीयोंका प्रयोग करके अनेक कहानियाँ लिखी हैं। जिनमें भारतीय संस्कृति के आदर्श साथ में वर्तमान युग की विचार प्रणाली, दार्शनिकता, मनोविश्लेषणात्मकता और साथ-साथ यथार्थवाद आदि का सुन्दर समन्वय किया है। कहानी के माध्यमसे अर्थिक विषमता तथा समाज की f विविध समस्याओं का निरूपण किया है। उन्होंने मानव जीवन मानसिक परिवेश, तथा मनो वैज्ञानिक सत्य स्पष्ट किया है। मानव के अन्तर्मन की दमित इच्छाओं का स्पष्ट चित्रण एवं कुण्ठा और निराशा से ग्रस्त जीवन के चित्र व्यक्त किए हैं।

जैनेन्द्रकुमार ने अपनी कहानियोंमें अपरोक्षित सत्य, प्रेम की विद्रूपता तथा मानव के व्यवहार का विवेचन प्रतीकों के द्वारा स्पष्ट किया है और सभी की मंगल भावना को अभिव्यक्त किया है।

जैनेन्द्रने अपनी कहानियों में सामान्य जीवनसे कथावस्तु लेकर मार्मिक ढंग से जीवन के सच्चाई यों को तथा करूणा भरे घटनाओं को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। उनकी कहानियों में समाज में होने वाले विषमता, अर्थिक विषमता, जीवनगत विसंगती आदि के साथ-साथ यथार्थ-जीवन की स्वाभाविकता उनसे

संबधित व्यक्ति, परिवार एवं किसी एक समाज की संस्कृति की मनो वैज्ञानिक झाँकियाँ मिलती है।

दार्शनिक कहानियों में समाज की सच्चाई तथा समस्याओं को परिवारिक घटनाओं के माध्यमसे प्रस्तुत करते हुए जैनेन्द्रकुमारजी सुक्ष्म सिध्दान्तो तथा सांस्कृतिक प्रेरणाओं को स्पष्ट किया है। आध्यात्मिक तथा नैतिक अनुभूतियों का चित्रण किया है। जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए मनो वैज्ञानिक कहानियोंमें व्यक्तियों के चरित्र का सुक्ष्म अध्ययन तथा विश्लेषण किया है। इन कहानियों का आरंभ तथा अन्त अधिक कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक है। लेखक की विशेषता यह है कि, कहानियों में घटना तथा संयोगों की संख्या कम है। मनोवैज्ञानिक तत्वों से निर्मित होते हुए भी कथा तत्वोंका कहीं भी लोप नहीं हुआ है।

सभी कहानियाँ अस्तित्वादी हैं अन्य कहानिकारोंकी तरह, नाट्यीकय चढाव उतार, इनका अभाव है लेकिन कहानीमें अन्तरिक संघार्ष ही कहानी काह मूल विषय है। इसीलिए यह कहानियाँ समाजिक यथार्थ की कहानियाँ न कहते हुए व्यक्ति मन की कहानियाँ ठीक लगता है। दार्शनिक कहानियोंमें ऐतिहासिक, पौराणिक आध्यात्मिक, भावात्मक, काल्पनिक, प्रतिकात्मक आदि चरित्रों में अन्तर्व्दन्व्द और रहस्यमय शक्ति का दर्शन होता है। अध्यात्मिक कहानियाँ उँचे स्तर की है। भावात्मक चरित्रों के माध्यमसे अध्यात्मिक तत्वों की व्याख्या की गई है। प्रेतिकात्मक चरित्रों के माध्यम से जीवन दर्शन प्रस्तुत किया गया है।

मनौ वैज्ञानिक कहानियों में चरित्रों द्वारा जीवन के विविध पहलुओंका दर्शन अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से किया गया है।

इन कहानियों के पात्र किसी-न-किसी विषयसे महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें कुछ यथार्थवादी, चिन्तनशिल तथा विशिष्ठ गुण-सम्पन्न है। चरित्र-चित्रण विविध क्रियाकलाप, मानसिक उथलपुथल संकेत, आदि के द्वारा किया गया है। इन कहानियोंमें कथानक अत्यंत सुक्ष्म है लेकिन चरित्र-चित्रण और पात्रों का मनो विश्लेषण कलात्मक एवं महत्त्वपूर्ण है। लेखकने अपने मनोवैज्ञानिक चरित्रों व्दारा संभ्रमित मन:स्थिति को स्पष्ट करने का अधिक प्रयास किया है। चरित्र पात्रोंका बाहरी तौर पर व्यवहार कम है लेकिन अंतरिक मानसिक घटनाओंका निरूपण अधिक है। इसलिए मानसिक विश्लेषण के मनोवैज्ञानिक सत्य का दर्शन अधिक सजीव तथा उँचे स्तर का हुआ है।

कहानियों में संवाद प्राय: पात्रों के अनुरूप है क्यों कि जैसे पात्र हैं वैसा उनका संवाद सरल, सुबोध, तथा स्पष्ट है। इनमें नाटकोय रूप का अभाव है। जो भी पाठक कहानी पढ लेता है वह लेखक की पर्यवेक्षण शक्ति तथा सांसरिक ज्ञान और मानव चरित्र को समझाने की क्षमता रखता है। जो भी पात्र हैं वह गंभीर, सरर गर्भित, तथा मनोवैज्ञानिकता को पुट उनमें विद्यमान है। कथानक के अनुसार प्राय: वातावरण का निर्माण किया है। इसीलिए हर एक कहानी में देशकाल, वातावरण, भाषा आदि विषयोंसे अलग नहीं है। घरेलु वातावरण बस्ती, मोहल्ले, नुक्कड, साथ-साथ, प्रकृतिके सुरम्य वातावरण की निर्मिती भी अधिक प्रभावात्मक बनी है।

जैनेन्द्रकुमारजी की भाषा शैली में तत्सम शब्द अधिक है। कहानी में परिस्थिति तथा भावो के अनुसार शब्दोंका प्रयोग किया गया है। कहानियों में ज्यादातर भाव-प्रधान शब्दावली

प्रयुक्त हुई है। मनोवैज्ञानिक कहानियों में जो भाषा के शब्दों को देखाती उसमें गंभीरता तथा विचार प्रधान शब्द अधिक है। कहीं-कहीं पर अंग्रजी भाषा के शब्द तो कहीं उर्दू भाषा के शब्द तो कहीं-कहीं पर बोलचाल तथा तदभाव एवं ग्रामिण भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार जैनेन्द्रकुमारजी ने भाषा के बारे में छोटे-छोटे वाक्यों में गतिशिलता, सजीवता एवं, धारावाहि-कता का सफल प्रयोग किया है।

शीर्षकों के बारे में जैनेन्द्रने वस्तुव्यंजक, मार्मिक, सार गर्भित, यथार्थपरक शीर्षक कहानियोमें विदयमान है। कहानी का शीर्षक उसका सर्व प्रथम उपकरण है। कहनी में शीर्षक ही ऐसा तत्त्व होता है जिसपर पाठके को सर्व प्रथम दृष्टि पड़ती है। जैनेन्द्र ने अपने कहानियों के जो शीर्षक चुने हैं उनमें संक्षिप्तता, लघुता, आकर्षण-युक्तता, अर्थपूर्णता, नविनता, कौतुहलजनक, आदि विवि-धता पूर्ण शीर्षक मिलते हैं।

इसी प्रकार जैनेन्द्रने समाज के यथार्थ को स्पष्ट करके मानव मन के सूक्ष्मसे सूक्ष्म रहस्योंका अत्यंत सशक्त ढंगसे विश्लेषण किया है। दार्शनिक कहानियों में नैतिकता तथा सांस्कृतिक महता होने के कारण वह आदर्शसे ओतपोत भरे हुए हैं। जैनेन्द्रकुमारजी की मनोवैज्ञानिक कहानियाँ यथार्थवाद से परिपूर्ण हैं। लेखकका उद्देश्य यह है कि अन्तर्मन की दमित इच्छाओं का प्रगठन करना है यदि स्पष्ट रूपसे बाहर न आयें तो मानव मन में कुण्ठा, विसंगती, विद्रूपता जन्म लेती है। समाज तथा समाज में रहनेवाली व्यक्ति उसके विविध समस्याओं का, प्रश्नोका, चिन्ताओंका, आशा आकांक्षाओं, रूढियों

कुरितियाँ तथा विडम्बनाओंका जैनेन्द्रकुमारजीने अपनी कहानियों में सशक्त चित्राण किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी के युग के और भी कुछ कहानीकार हैं, जिनमें इलाचन्द्र जोशी है। इनके कहानियों में भी मनोवैज्ञानिकता पनपती है। उनपर फ्रायड का प्रभाव है, मनो विश्लेषण के प्रति अधिक प्रयास किया गया है। जोशीजोको कुल चार कहानी संग्रह प्रसिध्द हो चुके हैं "रोमांटिक और छाया", "आहुती और दिवाली" "होली" तथा ऐतिहासिक कथाएँ आदि।

अज्ञेयनी उपन्यासकार के साथ-साथ एक कुशल कहानीकार भी हैं। प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं। अज्ञेय अपने उपन्यास तथा कहानी के माध्यमसे विद्रोह करते है। उन्होने विपथगा, परम्परा, कोठरीको बात, जयदोल आदि कहानी संग्रह है। इनके कहानियोंमें मानव मन को आन्तरिक प्रवृत्तियों का सुक्ष्म और विशद चित्राण मिलता है। "रोज" उनको सर्वश्रेष्ठ कहानी है।

श्री भागवती प्रसाद वाजपेयी ने भी अपनी कहानियों में वैज्ञानिक सत्यों का उद्घाटन किया है। उन्होने हिलारे, पुष्करिणी, और खाली बोतल आदि कहानी संग्रह लिखी है। उनको मिठाईवाल, झांकी, त्याग और वंशीवाहन उत्कृष्ठ कहानियाँ हैं।

भागवतीचरण वर्मा की कहानियों में आधुनिक युग की संघर्ष भावना, हलचल, और अशांति प्रतिबिम्बित है। वर्तमान शहरी जीवन के खोखलेपन और पतनोन्मुख मध्यमवर्गीय सभ्यता का वर्माजीने बहुत मीठी चुटकियाँ लेते हुए वर्णन किया है। अनेक कहानी संग्रह हैं - "खिलते फुल" ["दोबाँके" इन्स्टालमेंट आदि। पहाडी और नरोत्तमदास नागर भी प्रारम्भ में थोड़े बहुत अज्ञेय परवर्तित

परम्परा के कहानीकार थे।

यशपाल हिन्दी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कहानीकारों में से एक हैं। अब तक उनके अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, अभिशान्त, वो बुनिया, ज्ञान दान, पिंजरे की उडान, तर्क का तुफान, भस्मावृत, चिन्गारी, फूलों का कुर्ता, धर्म युध्द, उत्तराधिकारी और चित्र का शीर्षक आदि। यशपाल मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित हैं। इनकी कहानियों में यथार्थवादी दृष्टिकोन है और उनमें समाज की कुरीतियों की कटु आलोचना है। इन्होने अनेक प्रकार की समाजिक, ऐतिहासिक, और पौराणिक कहानियाँ लिखि हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क भी इसी समय के श्रेष्ठ कहानिकार माने जाते हैं। उनकी सामाजिक कहानियाँ यशपालसे मिलती-जुलती हैं। उनकी कहानियों व्दारा रूढ़ियों तथा अन्ध प्रथाओं पर चोट की है। पिंजरा, पाषाण, मोती, दूलों, मरुस्थल, खिलौने, चट्टान जादूगरनी, और चित्राकार की मौत आदि उत्कृष्ठ बनपड़ी है। इन कथाकारों के अतिरिक्त आधुनिक कहानीकारों में चन्द्रगुप्त विद्यालंकार रामप्रसाद पहाडी, के नाम भी कहानी क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय हैं। इन कथाकारों के अतिरिक्त आधुनिक कहानीकारोंमें वृन्दावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन , अमृतलाल नागर, उषादेवी मित्रा आदि का नाम उल्लेखनीय हैं।

कुछ सीमा तक हम अज्ञेय को जैनेन्द्र के समकक्ष रख सकते थे, किन्तु उनमें बौध्दिकता का प्राधान्य हो गया है और कहानीकार की अपेक्षा उनका कवि हृदय अधिक अभिलक्षित होता है। इसीलिए प्रेमचन्द के उपरान्त आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य को नया मोड देने के कारण जैनेन्द्रकुमारजी का स्थान ही सर्वोपरि है।

द्वितीय अध्याय

संदर्भ

१] डॉ. नुरजहाँ : कहानीकार जैनेन्द्र पृ.क्र. १४

२] डॉ. शिवकुमार शर्मा : हिन्दी साहित्य युक और प्रवृत्तियाँ पृ.क्र. ६३३

३] डॉ. नुरजहाँ : कहानीकार जैनेन्द्र पृ.क्र १८

४] डॉ. नुरजहाँ : कहानीकार जैनेन्द्र पृ.क्र. १९

५] डॉ. शिवकुमार शर्मा : हिन्दी सा.युग और प्रवृत्तियाँ पृ. क्र. ६३४

६] डॉ. शिवकुमार शर्मा : हिन्दी सा. युग और प्रवृत्तियाँ पृ.क्र. ६३४

७] डॉ. निरजा राजकुमार : जैनेन्द्र का कथा साहित्य पृ.क्र. २७

८] डॉ. निरजा राजकुमार : जैनेन्द्र का कथा साहित्य पृ.क्र. २७

९] डॉ. निरजा राजकुमार : जैनेन्द्र का कथा साहित्य पृ.क्र. २८

१०] डॉ. वासुदेव शर्मा : साठोत्तरी हिन्दी कहानी : मूल्यों की तलाश पृ.क्र.४५

११] डॉ. वासुदेव शर्मा : साठोत्तरी कहानी मूल्यों की तलाश पृ. क्र. ४५

१२] डॉ. वासुदेव शर्मा : साठोतरी हिन्दी कहानी : मूल्यों की तलाश पृ.क्र.४६

१३] डॉ.शकुन्तला शर्मा : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन पृ.क्र.. : "

१४] डॉ. शकुन्तला शर्मा : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन पृ,क्र. ५६

१५] डॉ. शकुन्तला शर्मा : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन पृ.क्र.६२

१६] डॉ.शकुन्तला शर्मा : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन पृ.क्र.८०

१७] डॉ.शकुन्तला शर्मा : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन पृ.क्र. ८०